श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।

वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

॥ श्री-रघुवीरगद्यम् ॥

(श्री-महावीरवैभवम्)

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font.

श्रीः

॥ श्री-रघुवीरगद्यम् ॥

(श्री-महावीरवैभवम्)

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

जयत्याश्रितसंत्रासध्वान्तविध्वंसनोदयः।
प्रभावान् सीतया देव्या परमव्योमभास्करः॥

बालकाण्डम्

जय जय महावीर !

महाधीर धौरेय !

देवासुर समर समय समुदित निखिल निर्जर निर्धारित निरवधिक माहात्म्य !

दशवदन दमित दैवत परिषदभ्यर्थित दाशरथिभाव !

दिनकर कुल कमल दिवाकर !

दिविषदधिपति रण सहचरण चतुर दशरथ चरमऋण विमोचन !

कोसलसुता कुमार भाव कञ्चुकित कारणाकार !

कौमार केळि गोपायित कौशिकाध्वर !

रणाध्वर धुर्य भव्य दिव्यास्त्र बृन्द वन्दित !

प्रणत जन विमत विमथन दुर्लळित दोर्लळित !

तनुतर विशिख विताडन विघटित विशरारु शरारु ताटका ताटकेय !

जडकिरण शकलधर जटिल नट पति मकुटतट नटनपटु विबुधसरिदतिबहुळ मधुगळन ललित पद नळिनरज उपमृदित निजवृजिन जहदुपल तनुरुचिर परममुनिवर युवति नुत !

कुशिकसुत कथित विदित नव विविध कथ !

मैथिल नगर सुलोचना लोचन चकोर चन्द्र !

खण्डपरशु कोदण्ड प्रकाण्ड खण्डन शौण्ड भुजदण्ड !

चण्डकर किरण मण्डल बोधित पुण्डरीक वन रुचि लुण्टाक लोचन !

मोचित जनक हृदय शङ्कातङ्क !

परिहृत निखिल नरपति वरण जनकदुहितृ कुचतट विहरण समुचित करतल !

शतकोटि शतगुण कठिन परशुधर मुनिवर करधृत दुरवनमतम निज धनुराकर्षण प्रकाशित पारमेष्ठ्य !

क्रतुहरशिखरि कन्तुक विहृत्युन्मुख जगदरुन्तुद जितहरि दन्ति दन्त दन्तुर दशवदन दमन कुशल दशशतभुज मुख नृपतिकुल रुधिर झर भरित पृथुतर तटाक तर्पित पितृक भृगुपति सुगति विहतिकर नत परुडिषु परिघ !

अयोध्याकाण्डम्

अनृत भय मुषित हृदय पितृ वचन पालन प्रतिज्ञावज्ञात यौवराज्य !

निषाद राज सौहृद सूचित सौशील्य सागर !

भरद्वाज शासन परिगृहीत विचित्र चित्रकूट गिरि कटक तट रम्यावसथ !

अनन्यशासनीय !

प्रणत भरत मकुटतट सुघटित पादुकाग्र्याभिषेक निर्वर्तित सर्व लोक योग क्षेम !

पिशित रुचि विहित दुरित वलमथन तनय बलिभुगनुगति सरभस शयन तृण शकल परिपतन भय चकित सकल सुर मुनिवर बहुमत महास्त्र सामर्थ्य !

द्रुहिण हर वलमथन दुरारक्ष शरलक्ष !

दण्डका तपोवन जङ्गम पारिजात !

विराध हरिण शार्दूल !

विलुळित बहुफल मख कलम रजनिचर मृग मृगयारम्भ संभृत चीरभृदनुरोध !

त्रिशिरः शिरस्त्रितय तिमिर निरास वासरकर !

दूषण जलनिधि शोषण तोषित ऋषिगण घोषित विजय घोषण !

खरतर खर तरु खण्डन चण्ड पवन !

द्विसप्त रक्षःसहस्र नळवन विलोलन महाकलभ !

असहाय शूर !

अनपाय साहस !

महित महामृथ दर्शन मुदित मैथिली दृढतर परिरम्भण विभव विरोपित विकट वीरव्रण !

मारीच माया मृग चर्म परिकर्मित निर्भर दर्भास्तरण !

विक्रम यशो लाभ विक्रीत जीवित गृध्रराज देह दिधक्षा लक्षित भक्तजन दाक्षिण्य !

कल्पित विबुधभाव कबन्धाभिनन्दित !

अवन्ध्य महिम मुनिजन भजन मुषित हृदय कलुष शबरी मोक्ष साक्षिभूत !

किष्किन्धाकाण्डम्

प्रभञ्जन तनय भावुक भाषित रञ्जित हृदय !

तरणिसुत शरणागति परतन्त्रीकृत स्वातन्त्र्य !

दृढघटित कैलास कोटि विकट दुन्दुभि कङ्काळ कूट दूर विक्षेप दक्ष दक्षिणेतर पादाङ्गुष्ठ दरचलन विश्वस्त सुहृदाशय !

अतिपृथुल बहु विटपि गिरि धरणि विवर युगपदुदय विवृत चित्रपुङ्ख वैचित्र्य !

विपुल भुज शैलमूल निबिड निपीडित रावण रणरणक जनक चतुरुदधि विहरण चतुर कपिकुलपति हृदय विशाल शिलातल दारण दारुण शिलीमुख !

सुन्दरकाण्डम्

अपार पारावार परिखा परिवृत परपुर परिसृत दव दहन जवन पवनभव कपिवर परिष्वङ्ग भावित सर्वस्व दान !

युद्धकाण्डम्

अहित सहोदर रक्षः परिग्रह विसंवादि विविध सचिव विस्रम्भण समय संरम्भ समुज्जृम्भित सर्वेश्वर भाव !

सकृत् प्रपन्न जन संरक्षण दीक्षित !

वीर !

सत्यव्रत !

प्रतिशयन भूमिका भूषित पयोधि पुळिन !

प्रळय शिखि परुष विशिख शिखा शोषिताकूपार वारिपूर !

प्रबल रिपु कलह कुतुक चटुल कपिकुल करतल तूलित हृत गिरि निकर साधित सेतुपथ सीमा सीमन्तित समुद्र !

द्रुतगति तरुमृग वरूथिनी निरुद्ध लङ्कावरोध वेपथु लास्य लीलोपदेश देशिक धनुर्ज्याघोष !

गगन चर कनक गिरि गरिम धर निगममय निज गरुड गरुदनिल लव गळित विष वदन शर कदन !

अकृतचर वनचर रणकरण वैलक्ष्य कूणिताक्ष बहुविध रक्षो बलाध्यक्ष वक्षः कवाट पाटन पटिम साटोप कोपावलेप !

कटुरटदटनि टङ्कृति चटुल कठोर कार्मुख विनिर्गत विशङ्कट विशिख विताडन विघटित मकुट विह्वल विश्रवस्तनय विश्रम समय विश्राणन विख्यात विक्रम !

कुम्भकर्ण कुलगिरि विदळन दम्भोळि भूत निःशङ्क कङ्कपत्र !

अभिचरण हुतवह परिचरण विघटन सरभस परिपतद् अपरिमित कपिबल जलधि लहरि कलकलरव कुपित मघवजि दम्भिहननकृदनुज साक्षिक राक्षस द्वन्द्वयुद्ध !

अप्रतिद्वन्द्व पौरुष !

त्र्यम्बक समधिक घोरास्त्राडम्बर !

सारथि हृत रथ सत्रप शात्रव सत्यापित प्रताप !

शित शर कृत लवन दशमुख मुख दशक निपतन पुनरुदय दर गळित जनित दर तरळ हरिहय नयन नळिनवन रुचि खचित खतल निपतित सुरतरु कुसुम विततति सुरभित रथ पथ !

अखिल जगदधिक भुज बल वर बल दश लपन लपन दशक लवन जनित कदन परवश रजनिचर युवति विलपन वचन समविषय निगम शिखर निकर मुखर मुख मुनि वर परिपणित !

अभिगत शतमख हुतवह पितृपति निर्ऋति वरुण पवन धनद गिरिश मुख सुरपति नुति मुदित !

अमित मति विधि विदित कथित निज विभव जलधि पृषत लव !

विगत भय विबुध परिबृढ विबोधित वीरशयन शायित वानर पृतनौघ !

स्व समय विघटित सुघटित सहृदय सहधर्म चारिणीक !

विभीषण वशंवदीकृत लङ्कैश्वर्य !

निष्पन्न कृत्य !

ख पुष्पित रिपु पक्ष !

पुष्पक रभस गति गोष्पदीकृत गगनार्णव !

प्रतिज्ञार्णव तरण कृत क्षण भरत मनोरथ संहित सिंहासनाधि रूढ !

स्वामिन् !

राघव सिंह !

उत्तरकाण्डम्

हाटक गिरि कटक लडह पाद पीठ निकट तट परिलुठित निखिल नृपति किरीट कोटि विविध मणि गण किरण निकर नीराजित चरण राजीव !

दिव्य भौमायोध्याधिदैवत !

पितृ वध कुपित परशु धर मुनि विहित नृप हनन कदन पूर्व काल प्रभव शत गुण प्रतिष्ठापित धार्मिक राजवंश !

शुभ चरित रत भरत खर्वित गर्व गन्धर्व यूथ गीत विजय गाथा शत !

शासित मधुसुत शत्रुघ्न सेवित !

कुश लव परिगृहीत कुल गाथा विशेष !

विधिवश परिणमदमर भणिति कविवर रचित निज चरित निबन्धन निशमन निर्वृत !

सर्व जन सम्मानित !

पुनरुपस्थापित विमान वर विश्राणन प्रीणित वैश्रवण विश्रावित यशःप्रपञ्च !

पञ्चतापन्न मुनिकुमार संजीवनामृत !

त्रेतायुग प्रवर्तित कार्तयुग वृत्तान्त !

अविकल बहुसुवर्ण हयमख सहस्र निर्वहण निर्वर्तित निज वर्णाश्रमधर्म !

सर्व कर्म समाराध्य !

सनातन धर्म !

साकेत जनपद जनि धनिक जङ्गम तदितर जन्तुजात दिव्य गति दान दर्शित नित्य निःसीम वैभव !

भव तपन तापित भक्तजन भद्राराम !

श्रीरामभद्र !

नमस्ते पुनस्ते नमः !

चतुर्मुखेश्वरमुखैः पुत्रपौत्रादिशालिने।
नमः सीतासमेताय रामाय गृहमेधिने॥

कविकथक सिंहकथितं कठोर सुकुमार गुम्भ गम्भीरम्।
भव भय भेषजमेतत् पठत महावीर वैभवं सुधियः॥

॥ इति श्री-रघुवीरगद्यम् समाप्तम्॥

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः॥